ISSN 2319-6785
वर्ष 31 (अंक 2)
जून - जुलाई 2019

द्वैमासिक

राष्ट्रवाणी

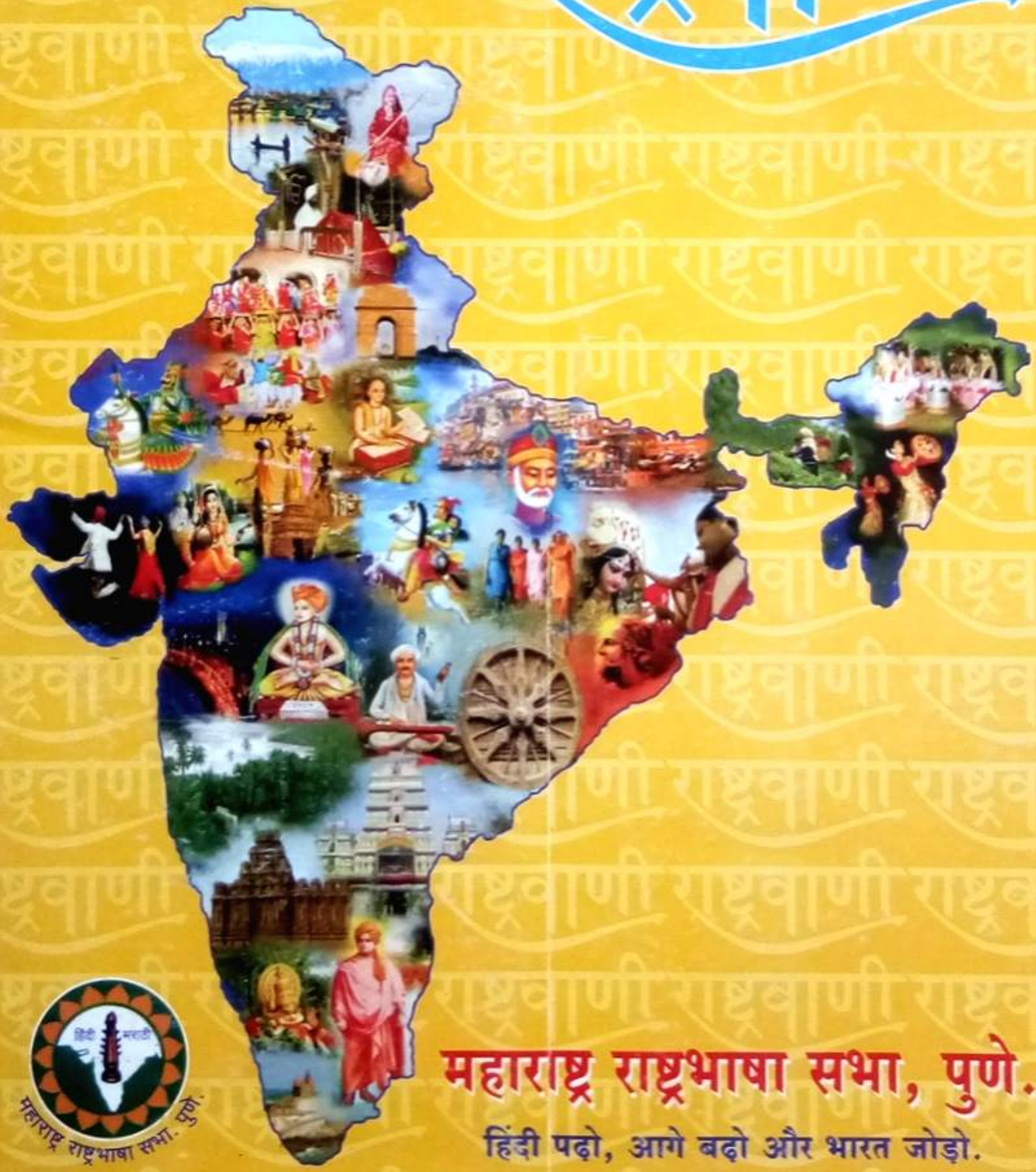

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे.

हिंदी पढ़ो, आगे बढ़ो और भारत जोड़ो.

केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली की
आर्थिक सहायता से प्रकाशित राष्ट्रीय स्तर की हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

ISSN 2319-6785 Rashtravani

दवैमासिक

राष्ट्रवाणी

हिंदी साहित्यिक-समीक्षात्मक-शोध पत्रिका

वर्ष 31 (अंक 2)

जून - जुलाई 2019

-: संपादक मंडल :-

पूर्व अध्यक्ष - प्राचार्य सु. मो. शाह

कार्याध्यक्ष - डॉ. वीणा मनचंदा

-: सहायक :-

डॉ. नीला बोर्वणकर डॉ. ऋचा शर्मा

डॉ. निशा ढवळे

राष्ट्रवाणी सदस्यता शुल्क :-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' के नाम से भेजिए।

प्रति अंक : रु. 50/- पंचवार्षिक : रु. 1000/-

द्ववैवार्षिक : रु. 500/- दस वर्ष के लिए : रु. 1500/-

मनीऑर्डर/ड्राफ्ट भेजने का पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे -

राष्ट्रभाषा भवन, 387 नारायण पेठ, पुणे - 411030

दूरभाष : 020 - 24458947 / 24454268

संलग्न पत्र में शुल्क का प्रकार,

अपना पूरा नाम और पिनकोड सहित पूरा पता, दूरभाष क्रमांक लिखिए।

प्रबंधक :- सौ. सुनेत्रा गोंदकर

प्रकाशक, मुद्रक :- शे. आ. जगताप, सचिव,

मुद्रणस्थान :- महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, मुद्रणालय

387, नारायण पेठ, पुणे - 411030

राष्ट्रवाणी साहित्यिक-समीक्षात्मक पत्रिका है। यह जरुरी नहीं कि लेखकों के विचारों से संपादक सहमत हो। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का स्वामित्व-अधिकार पत्रिका का है।

अनुक्रमणिका

जून – जुलाई 2019

1.	अपनी ओर से – गांधीमय,हिंदी सेवी प्राचार्य डॉ. विश्वास पाटील	– प्रा. सु. मो. शाह	2
2.	शिक्षक बनकर क्या भूखे मरना है ?	–डॉ. सदानंद भोसले	7
3.	हिंदी कहानी में 'दलित विमर्श'	–डॉ. राजेंद्र खैरनार	9
4.	शब्द–सत्ता का ग्लोबल जनतंत्र : मीडिया	–डॉ. विजयकुमार रोडे	14
5.	राजेश जोशी के अंतिम दशक की कविता में व्यंग्य	–डॉ. राजेश रसाळ	19
6.	राष्ट्रभाषा व प्रांतीय भाषाओं के विकास में बाधक : अंग्रेजी	–डॉ. प्रभु चौधरी	22
7.	अनामिका के साहित्य में शिक्षा की भूमिका	–श्री सिद्धेश्वर कोणदे	25
8.	साठोत्तरी हिंदी नाटकों में प्रयोगशीलता	–डॉ. मीनाक्षी कुरणे	27
9.	'कापूसकाळ के जगू': भारतीय किसान का प्रातिनिधिक चरित्र	–डॉ. एकनाथ पाटील	31
10.	पद्माकर की भाषा और ब्रजभाषा के विविध स्तर	–डॉ. अमित शुक्ल	35
11.	सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदी ग़ज़ल	–डॉ. सूरज चौगुले	41
12.	गिरिराज किशोर कृत 'ढाई घर' उपन्यास में चित्रित स्त्री...	–श्री अविनाश कोल्हे	44
13.	अमावस्या से पूर्णिमा तक सफर करती हिंदी	–श्री रितेंद्र अग्रवाल	47

गिरिराज किशोर कृत 'ढाई घर' उपन्यास में चित्रित स्त्री विमर्श

श्री अविनाश मारूती कोल्हे
शोध छात्र, हिंदी विभाग, पुणे विश्वविद्यालय,
पुणे - 411007. (मोबा. 9422327212)

स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य का चर्चित विषय रहा है। वस्तुत: नारी मुक्ति से संबद्ध रचा गया साहित्य स्त्री विमर्श कहलाता है। स्त्री विमर्श एक ऐसा आंदोलन है, जो नारी को उसके अधिकारों के प्रति सचेत करते हुए उसके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में संपूर्ण स्वतंत्रता की माँग करता है। जीवन में स्त्री पुरुष की भूमिका एक-दूसरे के लिए पूरक होनी चाहिए। स्त्री विमर्श की बात मात्र स्त्री-पुरुष संतुलन की नहीं बल्कि समाज और परिवार की व्यवस्था में बदलाव की है। मूलत: स्त्री विमर्श की बात मात्र नारी की अस्मिता की खोज करते हुए उसे सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक स्वतंत्रता के साथ स्त्री को खुला आकाश देकर उसे मानव के रूप में जीने लायक वातावरण बनाकर नारी के सशक्तीकरण पर बल देती है। वर्तमान उपन्यास साहित्य में स्त्री की त्रासदी और विडंबना, उसकी शोषित स्थिति, आर्थिक सामाजिक पराधीनता, सामंती मूल्य, रूढ़िग्रस्त मान्यताओं और धारणाओं से जुड़े प्रश्नों को खुले, तीखे एवं साहसपूर्ण ढंग से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया जा रहा है।

प्रस्तुत गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'ढाई घर' उपन्यास में गिरिराज किशोर जी ने मंझली चाची, बड़ी जेठानी रूपा, कला, छोटी चाची, रानी, सोना, सीमा मनसुखराय की पत्नी, रेहेमतुल्ला की पत्नी आदि स्त्री पात्रों के माध्यम से स्त्री विमर्श के विविध आयामों पर प्रकाश ड़ाला है। किशोर जी ने उपन्यास में कृष्ण राय की पत्नी, जिसे मंझली चाची कहा गया है, के माध्यम से एक स्त्री को अपने स्त्रीत्व को सिद्ध करते हुए चित्रित किया है। कृष्ण राय और मंझली चाची की शादी को काफी दिन होने के बाद भी उनके बच्चा नहीं होता, जिसके कारण वे एक अंग्रेज मेम से मिलने जाते हैं, तो मेम कृष्ण राय से कहती है कि आप अपनी जाँच करा लें। आपकी पत्नी में कोई दोष नहीं है। इस बात पर कृष्ण राय अपनी पत्नी से काफी उखड़े-उखड़े रहने लगते हैं। चाची खाना तक बंद करती है जिसके कारण वह दिन-ब-दिन कमजोर होती जाती है। एक दिन चाची उनके पाँव पकड़ती है और रोते हुए कहती है कि मुझे बताइए मैं कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? मैं तो यहाँ आपके सहारे आई थी। आप ही मुँह फेर लेंगे तो मैं कहाँ जाऊँगी। मेरा कौन है?

दरिया में बहते तिनके को भी आस होती है कभी तो किनारे लगेगा, पर मेरा तो उतना भी सहारा नहीं बचा मुझसे नफरत न कीजिए। मुझे मार डालिए। आपकी नफरत मुझे जलाए डाल रही है और मेरा प्रेम भी मुझे खाए जा रहा है।''[1] ''कृष्णा राय उससे कहते हैं कि 'तुम कभी माँ नहीं बन सकती। चाहो तो पतिव्रत खोकर कोशिश कर लो।' जिसके कारण मंझली चाची पत्थर सी-बनती जाती है। इसी कारण उनकी मौत हो जाती है। इस प्रसंग से निस्संतान स्त्री की त्रासदी को व्यक्त

किया गया है ।

सोना यह भास्कर राय की बेटी है जो विवाह के बाद काफी संघर्षमय जीवन का सामना करती है और अपना अस्तित्व स्थापित करती है जिसके लिए उसे राय परिवार जैसे सामंती परिवार की परंपराएँ तोड़नी पड़ती हैं। विवाह के बाद उसका पति उसे छोड़ देता है, तो वह हिम्मत न हारते हुए आधुनिक स्त्री की तरह नौकरी करने का फैसला करती है जो परिवार में से उसके भाई रघुवर छोड़कर किसी को रास नहीं आता । सोना को उसके दादा जी छोटे राय (राघव राय) द्वारा टोके जाने पर वह कहती है, ''छोटे दादा मैं इस लुप्तप्राय राय खानदान की बेटी नहीं हूँ एक स्वतंत्र व्यक्तित्व हूँ, मेरे भविष्य के बारे में आप लोग कहाँ तक निर्णय लेते रहेंगे, एक बार आप ले चुके हैं, वह गलत साबित हुआ, अब मुझे खुद लेने दीजिए । मैं अपने व्यक्तित्व को अपने पिता या पति के नाम पर मिट्टी में नहीं मिलाना चाहती ।''[2] इस पात्र के माध्यम से लेखक ने एक संघर्षकारी भारतीय नारी को पाठकों के सामने रखा है जो परिस्थितियों से न घबराते हुए उन्हें स्वीकार करती है और अपनी जिंदगी गुजारती है ।

इस उपन्यास में एक स्त्री पात्र है कला जो भास्कर राय की दूसरी पत्नी है । वह शादी के बाद खुश तो है लेकिन एक सामंती परिवार के रिवाजों में दब-सी जाती है, एक दिन उससे मिलने के लिए उसके भाई जगन बाबू आते हैं तो वे कला से पूछते हैं कि तू खुश है या नहीं? तो कला कहती है, ''खुश तो बहुत हूँ पर आजाद नहीं। आजाद होती तो मैं भी आपके साथ चलती, मैं भी गांधी जी के दर्शन करती । वैसे तो यहाँ किसी चीज की कमी नहीं । पर्दा है, बंधन है, छुआछूत है, सब बहुत मानते हैं पर अपनी शर्तों पर । आपने तो देखा है वहाँ मैं लड़की की तरह रहती थी। यहाँ बहू क्या हुई पिंजड़े की मैना हो गई । जब आपकी आजादी आ जाएगी तो क्या हम औरतों के ये पिंजड़े भी खुल जाएँगे।''[3] कला के इन सवालों से सुखी या सामंत परिवार की नारियों की त्रासदी पर भाष्य किया गया है जो देश आजाद होने के बाद खुद को आजाद महसूस नहीं करतीं ।

रूपा यह पात्र प्रस्तुत उपन्यास में भास्कर राय की पहली पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है । उनकी शादी तो बड़े शानो शौकत से होती है, लेकिन न होने के बराबर। शादी की रात ही रूपा को बेपनाह खाँसी शुरू होती है, जिसके कारण भास्कर घबरा जाता है । घरवाले चिंतित होते हैं, डॉक्टर को बुलाना चाहते हैं, लेकिन रूपा मना कर देती है । वह किसी को अपने आपको छुने तक नहीं देती । उसका भाई उसे अपने मायके ले जाता है, जहाँ पर कुछ दिन बाद ही उसकी मौत हो जाती है । वह अपनी माँ से कहती थी कि, ''वे मुझे छुना चाहते थे, प्यार करना चाहते थे मैंने उन्हें रोक दिया । उन्हें बुला दो मैं उनके चरण छूकर माफी माँगना चाहती हूँ ।''[4] अर्थात वह यही खेद करती रही कि, वह अपना धर्म नहीं निभा पाई ।

सारंगा भास्कर राय की तीसरी पत्नी है, जो अपने ही परिवार में हक और सम्मान के लिए लड़ती दिखाई देती है । भास्कर की दूसरी पत्नी के बच्चे रघुबर और सोना उसे माँ के रूप में स्वीकार नहीं कर पाते, जिसके कारण उनमें दूरियाँ बढ़ती जाती हैं । सोना की तो उससे बात ही नहीं बनती थी । बच्चे उसका कहा नहीं मानते

थे। जिससे नाराज होकर हमेशा कहा-सुनी होती थी। वह भास्कर से कहती है ''मैं तुम्हारे, बच्चों और तुम्हारे घरवालों की खुशी का ध्यान रखूँगी तो मेरी खुशी का ध्यान आप सबको भी रखना होगा। नहीं तो मुझे लगेगा कि मैं इस घर की बाँदी हूँ। मैं इस घर की बहू बनकर आई हूँ। दोनों में बहुत फर्क है। हवेली के जितने क्षेत्र में मैं रहती हूँ उसपर मुझे अपना अधिकार मिलना चाहिए। मुझपर विश्वास होना चाहिए, चाहे बच्चे हो या घर... जैसे मैं घर में आग नहीं लगाऊँगी ऐसे ही बच्चों को भी जहर देकर मार नहीं डालूँगी।''[5] इस प्रकार वह अपने हक और सम्मान के लिए लड़ती है।

बड़े राय की बेटी रानी की शादी बड़े शान से होती है, काफी दहेज भी दिया जाता है फिर भी उसके ससुर बड़े राय से उनका पसंदीदा घोड़ा 'जॉर्ज' माँग लेते हैं, जो काफी और मशहूर था जिसके जाने के कारण सभी आहत होते हैं। एक दिन काला उसका हाल-चाल जानने के लिए रानी से मिलता है, तो वह फूट-फूटकर रो पड़ती है। वह कहती है कि,''उसने अपने ससुर से कहा था कि 'जॉर्ज' को न बेचें वह पिता जी की शान है, आप उसे पिता जी को लौटा दें। मैं उनसे मुँह माँगी कीमत दिलवा दूँगी।''[6] लेकिन उसकी कोई नहीं सुनता उलटा उससे कहा जाता है, कि वह अपने मायके से बाहर आए। रानी अपनी असमर्थता दर्शाते हुए कहती है कि ''मैं कुछ नहीं कर पाई 'जॉर्ज' मेरे देखते-देखते चला गया। मैं खिड़की से बेबस झाँकती रह गई। उसकी आँखों से आँसू टपक रहे थे। वह मेरा तीसरा बेटा हो गया था राजू, मौजू की तरह।''[7] इस प्रसंग से लेखक ने भारतीय नारी की असमर्थता को पाठकों के सामने रखा है।

इस प्रकार से गिरिराज किशोर द्वारा लिखित 'ढाई घर' उपन्यास में आत्मनिर्भर जिजीविषापूर्ण, परंपरागत मूल्यों को स्वीकारनेवाली असहाय, पीड़ित, लाचार, विद्रोही, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को व्यक्त करने वाली, हक के लिए तथा सम्मान के लिए लड़ने वाली विभिन्न स्त्री पात्रों का चित्रण है। ये पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के बल पर पति-पत्नी के आपसी झगड़े, पारिवारिक मनमुटाव, विवाहबाह्य संबंध, स्त्री-पुरुष समानता, प्रेम भावना, विधवा समस्या, पर्दाप्रथा जैसे विभिन्न स्त्री विमर्श के आयामों को चित्रित करते हैं।

संदर्भ:

1.2.3 : ढाई घर : लेखक गिरिराज किशोर प्रकाशक; राजपाल ॲण्ड सन्स, दिल्ली संस्करण; (2011) पृ.क्र. 78

4. वही, पृ. क्र. 373
5. वही, पृ. क्र. 211
6. वही, पृ. क्र. 189
7. वही, पृ. क्र. 249

****